उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव

अध्याय दस

बाइबल आधारित संस्कृति एवं आधुनिक उपयोग

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2013 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., पो. बॉक्स 300769, फर्न पार्क, फ्लोरिडा 32730-0769 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1984 अंतर्राष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 150 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय.....1

II. नींव.....2

क. महत्व 2

ख. विरोधाभासी आदर्श 4

ग. विविधता 6

III.विकास.....8

क. महत्व 8

ख. विरोधाभासी आदर्श 9

ग. विविधता 11

IV.उपयोग.....12

क. महत्व 13

ख. विरोधाभासी आदर्श 14

ग. विविधता 16

V. सारांश.....18

चलचित्रअध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये ,, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया:
व्याख्या की नींव
अध्याय दस :
बाइबल आधारित संस्कृति एवं आधुनिक उपयोग

परिचय

किसी निश्चित समय पर या किसी अन्य समय में, प्रत्येक जो बाइबल की शिक्षा दे रहा है उसने किसी को यह पूछते हुए सुना होगा कि, "क्या बाइबल का यह अंश केवल सांस्कृतिक नहीं है?" उनके कहने का अक्सर क्या अर्थ होता है कि पवित्रशास्त्र के कुछ हिस्से बाइबल के समयों में प्राचीन संस्कृति में इतना ज्यादा सन्निहित होते हैं कि सम्भवतःउनको हमारे आज के दिनों में लागू नहीं किया जा सकता है। परिणामस्वरूप, मसीही अक्सर अपना बहुत ज्यादा समय बाइबल आधारित प्रसंगों और उन प्रसंगों की "संस्कृति" के मध्य भिन्नता करने में खर्च देते हैं जिन्हें वे आधुनिक जीवन में लागू करने की कोशिश करना चाहते हैं।

इस अध्याय में, हम एक भिन्न दृष्टिकोण का प्रस्ताव देने जा रहे हैं। पवित्रशास्त्र का कौन सा हिस्सा या तो संस्कृतिक है या फिर जीवन में लागू किए जाने के योग्य, इस की अपेक्षा, हम यह देखेंगे कि बाइबल का प्रत्येक हिस्सा दोनों अर्थात् सांस्कृतिक और लागू किए जाने योग्य है। सम्पूर्ण बाइबल प्राचीन सांस्कृतिक संदर्भ को प्रतिबिम्बित करती है, परन्तु यह फिर भी परमेश्वर का वचन होने के नाते इस या किसी अन्य तरीके से प्रत्येक के जीवन में लागू किया जाना चाहिए, चाहे हम कोई भी क्यों न हों, किसी भी समय पर और कहीं भी क्यों न रहते हों।

यह *उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया: व्याख्या की नींव* की हमारी श्रृंखला के ऊपर हमारा दसवाँ अध्याय है, और हमने इसका शीर्षक "बाइबल आधारित संस्कृति एवं आधुनिक उपयोग" दिया है। इस अध्याय में, हम देखेंगे कि पवित्रशास्त्र के सांस्कृतिक आयाम कैसे बाइबल के हमारे उपयोग को आधुनिक संसार में प्रभावित करते हैं।

जैसा कि हमने पहले के अध्यायों में कहा है, कि जब कभी भी हम बाइबल आधारित प्रसंगों को हमारे आज के दिनों में लागू करते हैं, तो हमें पवित्रशास्त्र के मूल श्रोताओं और आधुनिक श्रोताओं के बीच के युग, संस्कृति और व्यक्तिगत् दूरी को ध्यान में रखना चाहिए। यद्यपि ये तीनों बातें एक दूसरे से पूरी तरह अलग करके ध्यान में नहीं रखी जा सकती हैं, हम विशेष रूप से सांस्कृतिक मुद्दे के ऊपर ध्यान देने जा रहे हैं जो कि उस समय महत्वपूर्ण हो जाते हैं, जब हम पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ से आधुनिक उपयोग की ओर मुड़ते हैं।

संस्कृति को परिभाषित करने के कई तरीके हैं। परन्तु सामान्य तौर पर आधुनिक समाजशास्त्र और नृविज्ञान में यह दृष्टिकोण इस तरह से प्रकट होता है, हम संस्कृति को इस तरह से परिभाषित करेंगे:

अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं का प्रतिच्छेदन अर्थात् अन्तर्विभाजन करते हुए ऐसे आदर्श जो कि एक समुदाय के चरित्र को प्रस्तुत करते हैं

जैसा कि परिभाषा सुझाव देती है, कि संस्कृति में प्रतिच्छेदन अर्थात् अन्तर्विभाजन करते हुए आदर्शों का प्रतिबिम्ब होता है जैसे कि भाषा, कला, आराधना, प्रौद्योगिकी, पारस्परिक सम्बन्ध और सामाजिक अधिकार आदि। और ये अन्तर्विभाजन करते हुए आदर्श अवधारणाओं**,** व्यवहारों और भावनाओं को साझा करते हैं – अर्थात् हम जिसमें विश्वास करते, हम जो करते हैं, और हम जैसा महसूस करते हैं। परिणामस्वरूप, जब हम संस्कृति के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में ऐसा होता है कि कैसे ये गुण एक समाज की व्याख्या करते हैं – चाहे वह एक

चलचित्रअध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये ,, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परिवार, एक जातीय समूह, एक सामाजिक संगठन, एक धार्मिक संस्था, एक राष्ट्र और यहाँ तक कि एक पूरी मानव जाति ही क्यों न हो।

यह अध्याय बाइबल आधारिक संस्कृति और आधुनिक उपयोग के तीन आयामों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेगा: सबसे पहले हम बाइबल के आरम्भिक अध्यायों में बाइबल आधारित संस्कृति की नींव की जाँच करेंगे। दूसरा, हम संस्कृति में हुए कई बाइबल आधारित घटनाक्रमों के विकास को देखेंगे जो कि पुराने और नए नियम में घटित हुए हैं। और तीसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे बाइबल के ये सांस्कृतिक पहलू पवित्रशास्त्र के हमारे आधुनिक उपयोग को प्रभावित करते हैं। आइए सबसे पहले संस्कृति की बाइबल आधारित नींव को देखें।

नींव

जब हम संस्कृति की बाइबल आधारित नींवों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो हम हमारी खोज को उत्पत्ति 1-11 अध्यायों को करते हुए करेंगे। सर्वप्रथम, हम यह देखेंगे कि ये अध्याय कैसे संस्कृति के महत्व को स्थापित करते हैं। दूसरा, हम देखेंगे कि ये कैसे इन दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्शों का परिचय कराते हैं। और तीसरा, हम ध्यान देंगे कि कैसे पवित्रशास्त्र के ये प्रथम ग्यारह अध्याय परमेश्वर के विश्वासयोग्य सेवकों के बीच में सांस्कृतिक विविधता के मंच को तैयार करते हैं। आइए संस्कृति के महत्व से आरम्भ करें।

महत्व

उत्पत्ति के पहले ग्यारह अध्यायों में सृष्टि से लेकर अब्राहम के दिनों के समय के संसार की पूरी कहानी मिलती है। वे विशेष कर हमारे अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे इस संसार और मनुष्य की संस्कृति के लिए परमेश्वर के आदर्शों के नूमनों की नींव रखते हैं। इस तरह से, वे हमारे बाकी की उत्पत्ति की पुस्तक के पठन् को न केवल मार्गदर्शन देते हैं, अपितु बाकी के पवित्रशास्त्र को भी।

संस्कृति की नींव सबसे पहले उत्पत्ति 1:28 में प्रकट होती हैं, एक ऐसा प्रसंग जिसे अक्सर "सांस्कृतिक आदेश" कह कर पुकारा जाता है। यहाँ पर, परमेश्वर ने मानव जाति से कहा:

> **और परमेश्वर ने उनको आशीष दी: और उन से कहा, फूलो- फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो (उत्पत्ति 1:28)।**

सांस्कृतिक आदेश के महत्व को समझने और लागू करने के लिए, हमें कुछ ऐसी बातों को स्मरण रखना चाहिए जिसे हमने पहले के अध्यायों में देखा है। परमेश्वर का इतिहास के लिए अन्तिम उद्देश्य सदैव यह रहा है कि वह इसे स्वयं की दृश्य महिमा से भर दे ताकि प्रत्येक प्राणी अनन्तकाल के लिए उसकी आराधना करे। और परमेश्वर के द्वारा सृष्टि के आरम्भिक चरणों को स्थापित करने के बाद, सांस्कृतिक आदेश ने यह संकेत दिया कि मानव जाति का दायित्व सृष्टि को परमेश्वर की अन्तिम दिखाई देने वाली महिमा की तैयारी के लिए विकसित करना है।

> **परमेश्वर ने मानव जाति को सांस्कृतिक आदेश अत्यन्त साधारण शब्दों में दिया ताकि संसार, अर्थात् सृष्टि उसकी महिमा से भर जाए। हम सृष्टि के चित्र को एक ऐसे रूप में देखते हैं कि मानो वह किसी मकान का निर्माण हो, ऐसे जैसे कि वह एक प्राचीन मन्दिर हो। और जब एक मन्दिर का निर्माण हो जाता है, तो**

जिस ईश्वर ने इसे बनाने के लिए अधिकृत किया था वह इसमें निवास करता है। और इसलिए, सृष्टि के लिए बाइबल आधारित दृष्टिकोण यह है कि पूरी पृथ्वी परमेश्वर के रहने के निवास स्थान के रूप में निर्मित की गई थी, अर्थात् वह उसका पवित्र स्थान हो। परन्तु इसकी अपेक्षा एक मूर्ति परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करती है – एक पक्षी या एक शेर की मूर्ति या फिर कोई ऐसी ही मूर्ति जिसे उस मन्दिर में रखा हुआ है – परमेश्वर ने पुरूष और स्त्री को उसके स्वरूप को प्रकट करने के लिए ठहराया था। और सांस्कृतिक आदेश के दिए जाने में, परमेश्वर वास्तव में यह कह रहा था कि, "मेरे स्वरूप का गुणन करो, पृथ्वी पर भर जाओ, और फिर इसे अपने अधिकार में ले लो, उसके ऊपर एक याजक के रूप में अधिकार का प्रयोग करो। और इस तरह से, सांस्कृतिक आदेश ऐसा था कि परमेश्वर के स्वरूप को प्रकट करने वाले परमेश्वर के प्रभुत्व को सृजित संसार के ऊपर प्रयोग करेंगे ताकि पृथ्वी उस परमेश्वर जिसने इसकी रचना की है, के लिए रहने का एक स्थान बन जाए. बिल्कुल वैसे जैसे उसका स्वर्गीय सिंहासन का कमरा है, जिसकी झलक को हम यशायाह 6 जैसे स्थानों में देखते हैं, पृथ्वी को वैसे ही होना था। और इसलिए, उदाहरण के लिए, यह कोई नई बात नहीं है, कि पुराना नियम हमें यह कहता है कि पृथ्वी उसकी महिमा से ऐसे भर जाएगी जैसे समुद्र पानी से ढका हुआ है, क्योंकि यही इसके लिए परमेश्वर का वास्तविक उद्देश्य था।

-डॉ. माइको गोल्डो

बाइबल के ठीक आरम्भ में ही उत्पत्ति 1 में, पतन की घटना होने से पहले, परमेश्वर ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण आदेश या निर्देशों के समूह को – वास्तव में, जिसके लिए हम लगभग ऐसा कह सकते हैं कि एक ऐसा सांसारिक दृष्टिकोण – आदम और हव्वा को दे दिया, और वह यह था कि उसे इस बाग की सुन्दरता को और इसकी शासन व्यवस्था और उसकी उत्कृष्टता को लेना था और इसे पूरे संसार में फैला देना था। और बाइबल की कहानी बहुत अच्छे तरीके से पतन और इसमें असफल हो जाने के बारे में है, और फिर इसके दूसरे आदम और उसकी दुल्हिन: कलीसिया और यीशु मसीह के द्वारा यह आदेश पुन: आरम्भ होता है। और इस तरह से सांस्कृतिक आदेश, वह सृजनात्मक आदेश, वह उत्पत्ति से लिया हुआ मूल विधान, बाइबल के सन्देश के बिल्कुल केन्द्र में है, और, मैं यह सुझाव दूँगा कि, यह पूरी तरह से छुटकारे से सम्बन्धित है, उसके बारे में है। एक विद्वान ने छुटकारे को "सृष्टि को पुनः प्राप्त किया जाना" कह कर पुकारा है। और मैं सोचता हूँ कि यह एक सुन्दर स्वरूप है। जो कुछ बाइबल में है, उसके बारे में यह एक सुन्दर व्यापक समझ है। मैंने अक्सर बाइबल के सन्देश को ऐसे वर्णित किया है कि जैसे कि परमेश्वर उसके राज्य, या उसके शासन को, स्वर्ग से पृथ्वी पर, सृष्टि से नई सृष्टि की ओर पुन: स्थापित कर रहा हो। और यह, अर्थात् परमेश्वर दो स्वर्गीय वास्तविकताओं को पूरी तरह से, पूर्णता के साथ पार्थिव वास्तविकताओं में परिवर्तित होने के लिए एक साथ ला रहा है और साथ ही सृष्टि से लेकर नई सृष्टि के अन्तिम लक्ष्य तक परमेश्वर के कार्य के लिए लौकिक भाव को देने के दो ध्रुवों, दो अक्षों के बीच में यात्रा करता है। और इसके केन्द्र में विचार यह है कि परमेश्वर उसकी सुन्दरता, उसकी उत्कृष्टता, या बाइबल की भाषा प्रयोग करें तो "उसकी महिमा" को पूरी पृथ्वी के ऊपर विस्तार कर रहा है। और यही सभी मनुष्यों की व्यक्तिगत् रूप से बुलाहट है, इसी के साथ ही साथ परमेश्वर की कलीसिया में छुटकारा पाई हुई मानव जाति की भी।

- डॉ. जोनाथन टी पेर्निंगटन

हम इसे उत्पत्ति 1:26 में देखते हैं जहाँ परमेश्वर कहता है कि, "आओ हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाएँ।" प्राचीन संसार में, राष्ट्रों के राजाओं को ईश्वर का स्वरूप आंशिक रूप से कह कर पुकारा जाता था, क्योंकि

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

उनके राजकीय कार्य उनके ईश्वरों की इच्छा को जानना था और उनकी संस्कृति को इसके अनुसार निर्मित करना था। इस प्रकाश में, उत्पत्ति के आरम्भिक अध्याय यह स्पष्ट करते हैं कि समस्त मानव प्राणी उस तरह की राजकीय सांस्कृतिक सेवा को परमेश्वर की इच्छा को इस पृथ्वी पर विस्तार करने के लिए रचे गए थे।

इसके अतिरिक्त, उत्पत्ति 2 यह विवरण देती है कि प्रत्येक सांस्कृतिक आधारित घटनाक्रमों का विकास परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होना परमेश्वर के लिए पवित्र राजकीय सेवा के समान है। आयत 15 में हम यह शिक्षा पाते हैं कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उसके पवित्र बाग में "इसमें काम करने और इसकी रक्षा करने" के लिए रखा था। ये अभिव्यक्ति दो इब्रानी क्रियाओं: *अवाड* जिसे अक्सर "काम करने के लिए" या "मजदूरी करने के लिए" और *शामार*, साधारणतया "देखरेख करने" या "रक्षा करने के लिए" अनुवादित किए जाने वाले शब्दों के एक असामान्य संयोजन से बना है। मूसा ने इन शब्दों को केवल एक अन्य स्थान पर इकट्ठा करके उपयोग किया है – गिनती 3:8 में जहाँ पर उसने लेवीय याजकों की मिलाप वाले तम्बू के सामने परमेश्वर की महिमामयी उपस्थिति में सेवकाई करने के बारे में वर्णित किया है।

इसलिए, उत्पत्ति के आरम्भिक अध्याय एक दम से ही बाइबल आधारित दृष्टिकोण की नींव को स्थापित करते हैं कि संस्कृति हमारे अस्तित्व के लिए कोई छोटा सा आयाम नहीं है। इसकी अपेक्षा, यह परमेश्वर के लिए हमारी राजकीय और याजकीय सेवकाई है। परमेश्वर ने हमें इस पृथ्वी को उसकी दृश्य महिमा के अन्तिम प्रगटीकरण की तैयारी के लिए, विकसित करने, शासन व्यवस्था, सुन्दरता और पवित्र करने के लिए ठहराया है।

> **मैं समझने के लिए सोचता हूँ कि क्यों परमेश्वर ने मानव को सांस्कृतिक आदेश दिया, यह स्मरण रखने के लिए महत्वपूर्ण है कि मनुष्य विशेष रूप से उसके स्वयं के स्वरूप में रचा गया था। इसलिए यहाँ पर दिव्य स्वरूप का एक संरचनात्मक घटक है – वह यह है कि हम तो केवल परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए हैं। परन्तु फिर यहाँ पर कार्यात्मक घटक भी है, जिसमें हम परमेश्वर की महिमा को प्रकट और प्रदर्शित ऐसे विशेष तरीके से करते हैं जो कि मानव प्राणी होने के नाते हमारे लिए बिल्कुल ठीक है, जिसे हम लेकर चलते हैं और उसकी महिमा को उन कामों के द्वारा प्रकट करते हैं, जिन्हें हम करते हैं। इसलिए जब हम सांस्कृतिक आदेश के बारे में सोचते हैं, तो हमारे पास ऐसा कार्य है जिसमें हमें पृथ्वी को भर देना है और इसे अपने अधीन कर लेना है, इसे अदन के जैसे संसार वाले बगीचे वाला, और इसकी तरह की अन्य बातों जैसा बना देना है, परन्तु साथ ही इसे भर देना, इसमें बस जाना है। और इसलिए विचार यह है कि हमें सांस्कृतिक आदेश को परमेश्वर की महिमा को विस्तार विशेष रूप से मानवीय रूप में उसके दिव्य स्वरूप में रचे होने के द्वारा उसकी महिमा को पृथ्वी के अन्तिम छोर तक प्रदर्शित करते हुए करना है।**
>
> **- डॉ. ब्रूस बाऊगुस**

अब क्योंकि हमने बाइबल आधारित संस्कृति की महत्वपूर्णता को देख लिया है, हमें एक दूसरे मुद्दे के ऊपर ध्यान देना चाहिए: दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्शों की बाइबल आधारित नींव जिनको पूरे इतिहास में मानव प्राणियों ने अनुसरण किया।

विरोधाभासी आदर्श

जब हम संसार के विभिन्न हिस्सों में यात्रा करते हैं, तो हमें स्वयं को स्मरण दिलाना होता है कि लोग विभिन्न तरह से विभिन्न कार्यों को करते हैं। हमें सड़क के एक ही तरफ वाले हिस्से में गाड़ी चलाने की, एक ही जैसी भाषा बोलने, या एक ही तरह के कपड़ों को पहनने की आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु फिर भी, उत्पत्ति के आरम्भिक अध्याय स्पष्ट कर देते हैं कि संस्कृति कभी भी सामान्यतया तटस्थ नहीं होती है। इसके विपरीत, एक तरह से या अन्य तरह से प्रत्येक संस्कृति में होने वाले घटनाक्रमों में प्रत्येक तरह का विकास या तो परमेश्वर को प्रसन्न करता है या फिर अप्रसन्न, जब यह दो में से एक विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्शों को प्रतिबिम्बित करता है।

बाइबल के लेखक अच्छी तरह से सजग थे कि मानव प्राणियों ने कई तरह से संस्कृति को विकसित किया है। परन्तु उनके दृष्टिकोण से, सभी संस्कृतियाँ मूल रूप से एक या दो श्रेणियों में आती हैं: ऐसे सांस्कृतिक आदर्श जो कि परमेश्वर की सेवा करते हैं और ऐसे सांस्कृतिक आदर्श जो कि उसका विरोध करते हैं।

जैसा कि हम बाद में देखेंगे कि, ये सांस्कृतिक विशिष्टताएँ उस समय बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती हैं जब हम बाइबल को आज के समय उपयोग करते हैं। परन्तु अभी के लिए, आइए हम यह ध्यान दें कि कैसे यह विभाजन सबसे पहले बाइबल के आरम्भिक अध्यायों में स्थापित हुआ है।

उत्पत्ति 3 में, आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की जाँच में भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाने के कारण असफल हो गए। उसके बाद में, परमेश्वर ने प्रकट किया कि पाप में उनका पतन मानव प्राणियों को दो भिन्न सांस्कृतिक पथों पर चलने के लिए नेतृत्व प्रदान करेगा। सुनिए उस तरीके को जिसमें परमेश्वर ने इन दो सांस्कृतिक गतिविधियों को उत्पत्ति 3:15 में वर्णित किया है, जब उसने सर्प से यह कहा कि:

और मै तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।

संक्षेप में कहना, "स्त्री" जिसका उल्लेख यहाँ किया है, वह हव्वा है, जो कि प्रथम स्त्री थी, जिसे परमेश्वर ने रचा था और सर्प यहाँ पर शैतान है।

ये प्रसंग सम्पूर्ण मानव संस्कृति के चरित्र के विभाजन को स्थापित करता है। स्त्री की संतान से चाहा गया है कि वह परमेश्वर की सेवा विश्वासयोग्यता से करे। और सर्प की संतान से चाहा गया है कि वह उसका विरोध करे। और ये विभाजन निरन्तर मसीह के आगमन तक मानवीय संस्कृति को विभाजित रखेगा, जो कि हव्वा की महान् संतान होगा, जो शैतान के ऊपर अन्तिम विजय को पूरा करने के लिए आएगा।

ये दो पथ तत्काल ही कैन और हाबिल की कहानी में उत्पत्ति 4 में प्रगट होते हैं। अध्याय 4 के अन्त में, हम देखते हैं कि कैसे कैन और उसके वंशज् सर्प की संतान के रूप में जीवन यापन कर रहे हैं। उन्होंने एक उच्च परिष्कृत संस्कृति का गठन किया, परन्तु परमेश्वर की इच्छा का विरोध करने की प्रवृत्ति के साथ और अपने प्राकृतिक पूर्वजों को इबलीस के साथ उसे अपना आत्मिक पिता बनाते हुए परिवर्तित कर लिया।

परन्तु उत्पत्ति 4 में हम शेत के वंशजों के अभिलेख के बारे में पाते हैं जिन्होंने स्त्री के वंशज् के रूप में एक संस्कृति को विकसित किया। उन्होंने परिवारों और जनजातियों का गठन किया। उन्होंने धार्मिक प्रथाओं और भाषा को विकसित किया। वे सिद्ध नहीं थे, परन्तु उन्होंने ऐसे सांस्कृतिक आदर्शों की स्थापना के लिए कठिन परिश्रम किया, जिन्होंने परमेश्वर की सेवा और महिमा की। इस समय से आगे, पवित्रशास्त्र निरन्तर दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्शों की भिन्नता को प्रकट करता है।

अब, हमें यहाँ पर सावधान होना चाहिए। पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने और इसे लागू करने के लिए, हमें यह भी देखना चाहिए कि यहाँ पर मानव संस्कृति के इन दो पथों के बीच में बहुत सी समानताएँ भी हैं। उत्पत्ति 4 और 5 ये संकेत देते हैं कि कैन और हाबिल दोनों ने ही प्रकृति को अपने अधीन करना चाहा। उन्होंने दोनों समाजों और धार्मिक प्रथाओं को विकसित किया। और, जैसा कि शेत और कैन की वंशावली प्रदर्शित करती हैं कि दोनों वशों ने विवाह किए और उनके बच्चे थे।

यह उन लोगों के लिए कितना अधिक संभव था जो इन विभिन्न सांस्कृतिक आदर्शों का अनुसरण करते हुए संस्कृति की ऐसी ही समान अभिव्यक्तियों को विकसित करते? पवित्रशास्त्र के बाकी के हिस्से से हम सीखते हैं कि ये समानताएँ दो कारणों से प्रकट हुई।

एक तरफ तो, परमेश्वर का सामान्य अनुग्रह, उसकी मानवजाति की ओर न-बचाने वाली दया, शैतान और उन लोगों की पापपूर्ण प्रवृति जो उसका अनुसरण करते हैं, को रोकती है। और इसके परिणामस्वरूप, यहाँ तक कि इस संसार की सबसे ज्यादा शैतानिक संस्कृतियाँ भी परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप स्वयं को कुछ मात्रा में प्रदर्शित करती हैं। दूसरी तरफ, पाप निरन्तर उन लोगों को भ्रष्ट करता चला जाता है जो कि परमेश्वर के पथ का

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अनुसरण करते हैं। परिणामस्वरूप, यहाँ तक कि इस संसार की सबसे पवित्र संस्कृति भी परमेश्वर की सिद्ध इच्छा का पालन करने में असफल हो गई है।

कैन और हाबिल के समय से लेकर अब हमारे दिनों तक, सदैव दोनों अर्थात् परमेश्वर के विश्वासयोग्य सेवकों और जो उसके विरूद्ध बलवा करते हैं उनके बीच में विभिन्नतायें और समानतायें बनी हुई हैं। और जब हम पवित्रशास्त्र को हमारे आज के दिनों में लागू करने की कोशिश करते हैं, तो हमारे मन में इन सांस्कृतिक भिन्नताओं को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

बाइबल आधारित संस्कृति की महत्वपूर्णता की नींव की खोज कर लेने, और दो विरोधी सांस्कृतिक आदर्शों को स्थापित कर लेने के बाद, हम अब हमारे तीसरे तथ्य की ओर मुड़ सकते हैं: जो कि पवित्रशास्त्र के आरम्भिक अध्यायों में परमेश्वर अनुमोदित सांस्कृतिक विविधता है।

विविधता

उत्पत्ति के पहले कुछ अध्याय मौलिक रूप से कुछ व्यक्तिगत् मानव प्राणियों के बारे में बातचीत करते हैं। इसलिए, वहाँ पर ऐसे कोई उदाहरण नहीं मिलता जिनमें समुदाय बाइबल के इस हिस्से में सांस्कृतिक विविधिता को प्रदर्शित कर रहा हो। परन्तु फिर भी, परमेश्वर ने उत्पत्ति के प्रथम अध्यायों में सांस्कृतिक विविधिता के मंच को इस तरह से स्थापित किया है कि उसने उसकी इच्छा को आरम्भिक मानवीय इतिहास में व्यक्तिगत् लोगों के द्वारा प्रकाशित किया है।

सांस्कृतिक विविधता की नींव का वर्णन करने के लिए कई तरीके हैं, परन्तु समय की कमी के कारण, हम इस बात पर ध्यान देंगे कि कैसे सांस्कृतिक विविधता "विशिष्ठ प्रकाशन" और जिसे हमें साधारण रूप से "सामान्य प्रकाशन" कहते हैं, के द्वारा विकसित हुई है।

"विशिष्ठ प्रकाशन" वह शब्द है जिसे परम्परावादी धर्मशास्त्रियों ने परमेश्वर का स्वयं और उसकी इच्छा को कुछ चुने हुए लोगों के ऊपर स्वप्नों, दर्शनों, भविष्यद्वक्ताओं, पवित्रशास्त्र और अन्य जाने पहचाने तरीकों के द्वारा सूचित करने के लिए उपयोग किया है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति के आरम्भिक अध्याय में, परमेश्वर ने स्वयं को मौखिक रूप से आदम और हव्वा, कैन और हाबिल और नूह के ऊपर प्रकाशित किया।

दूसरी तरफ, "सामान्य प्रकाशन" परमेश्वर के स्वयं और उसकी इच्छा के प्रकटन को सारी सृष्टि में, दोनों अर्थात् लोगों में – उनके मानवीय व्यक्तित्वों में, सांसारिक और आत्मिक क्षमताओं में, और अन्य गुणों में – और परिस्थितियों में – बाह्य रूप से, दिखाई देने वाले संसार में, होने के लिए सूचित करता है। हम इसे भजन संहिता 19 और रोमियों 1:18-20 जैसे प्रसंगों में देखते हैं।

परमेश्वर ने विशिष्ठ और सामान्य प्रकाशनों को हमारी सहायता के लिए उपयोग किया कि हम कैसे यह समझें कि कैसे परमेश्वर उसके लोगों के बीच सांस्कृतिक विविधता के मंच को तैयार करता है।

हम इसे उस तरीके में देखते हैं जिसमें विश्वासयोग्य लोगों ने उसी विशिष्ठ प्रकाशन का विभिन्न तरीकों से आज्ञापालन किया, क्योंकि वे भिन्न लोग भिन्न परिस्थितियों का सामना कर रहे थे। उदाहरण के लिए, आदम और हव्वा ने उत्पत्ति 1:28 में सांस्कृतिक आदेश को विशिष्ठ प्रकाशन के द्वारा प्राप्त किया था। परन्तु आदम और हव्वा के पास भिन्न तरह के तोड़े, व्यक्तित्व, शारीरिक क्षमतायें और ऐसी ही अन्य बातें थीं। वे व्यक्तिगत् रूप से भिन्न परिस्थितियों से निपटे। ये विविधतायें किसी भी मात्रा में उनके बीच में क्यों न प्रगट हुई हो, आदम और हव्वा को उस समय भिन्न तरीकों से उनके जीवनों में विशिष्ठ प्रकाशन के सांस्कृतिक आदेश को लागू करना था।

इसके अतिरिक्त, मनुष्य ने अक्सर उसी विशिष्ठ प्रकाशन को विविध तरीकों से कई बार जीवन में लागू किया है क्योंकि लोगों और परिस्थितियों में चलते रहने वाले परिवर्तिन इसमें सम्मिलित है। केवल एक उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर ने उन्हें सबसे पहले सांस्कृतिक आदेश दिया, तो उस समय पाप का इस संसार में प्रवेश नहीं हुआ था। परन्तु आदम और हव्वा ने परमेश्वर के विरूद्ध बलवा किया, उनमें और उनकी परिस्थितियों में परिवर्तन

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हो गया और परिणामस्वरूप, जिस तरह से उन्होंने सांस्कृतिक आदेश की आज्ञा का पालन किया वह भी परिवर्तित हो गया। सच्चाई तो यह है कि, उत्पत्ति 3 में दिए हुए विशिष्ठ प्रकाशन ने यह प्रकाशित किया कि कैसे पीड़ा और निरर्थकता समय और मानव जाति के प्रगति करने के साथ साथ सांस्कृतिक आदेश की पूर्णता कठिन होती चली जाएगी।

हम इसे देख सकते हैं कि उस जैसी विविधता बारी बारी से प्रकट होती रहती है जैसे जैसे परमेश्वर ने एक के बाद दूसरा विशिष्ठ प्रकाशन समय के बीतने के साथ साथ जोड़ा। एक या अन्य सीमा में, प्रत्येक नये विशिष्ठ प्रकाशन ने पहले के विशिष्ठ प्रकाशनों की शर्तों में संशोधन किया। इस तरह से, प्रत्येक समय जब भी परमेश्वर ने नए विशिष्ठ प्रकाशनों को दिया,तो उसके विश्वासयोग्य लोगों को परिवर्तन के द्वारा अनुक्रिया करने की आवश्यकता थी कि वे कैसे उसकी सेवा दोनों अर्थात् उस समय या समय के साथ साथ करेंगे।

बिल्कुल आरम्भ से ही, विशिष्ठ और सामान्य प्रकाशनों ने सभी तरह की विविधता को इस तरीके से नेतृत्व प्रदान किया है कि आरम्भिक मानव प्राणियों को परमेश्वर की सेवा करनी थी। और जैसा कि हम बाद में इस अध्याय में देखेंगे, इस आरम्भिक विविधता ने बाइबल आधारित इतिहास और यहाँ तक कि आज के लिए भी परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के समाजों के लिए सांस्कृतिक विविधता की नींव को रखा।

उत्पत्ति में दिया हुआ सांस्कृतिक आदेश हमें फलदायी और फलने फूलने, पृथ्वी पर भर जाने और इसके ऊपर अधिकार कर लेने का स्मरण दिलाता है। यह सांस्कृतिक विविधता की ओर नेतृत्व प्रदान करता है। और प्रश्न यह उठ खड़ा होता है कि, क्या यह वास्तव में परमेश्वर की योजना का हिस्सा है? क्या परमेश्वर विभिन्न संस्कृतियों के बीच विविधता की मंशा रखता है? और मैं यह कहूँगा कि पवित्रशास्त्र की शिक्षा यह है कि, हाँ, यह बिल्कुल ठीक है। यह परमेश्वर के कार्य का परिणाम है जिसमें वह हमें ऐसा ही करने के लिए बुलाहट देता है...उसने हमें एक ऐसे वातावरण के लिए सृजा है जो कि एकदम से ठीक विविधता के लिए उसकी इच्छा के केन्द्र में है: यहाँ पर केवल शुष्क भूमि ही नहीं है, यहाँ पर समुद्र भी है। यहाँ पर मात्र सूर्य ही नहीं है, अपितु यहाँ पर अन्य तरह के तारे भी हैं। यहाँ पर मात्र पक्षी ही नहीं हैं, अपितु यहाँ पर सभी तरह के पशु भी हैं। और यहाँ पर केवल एक ही तरह के मानव प्राणी नहीं हैं, यहाँ पर पुरूष और स्त्री भी हैं। इसलिए जब हम उस स्वरूप का विस्तार, जिसमें परमेश्वर जिसने हमें सृजा है, उसकी पूरी सृष्टि में इस तरीके से करते हैं, तो यह निश्चित है कि हमें चाहिए कि वैसी विविधता दर्पण में दिखाई दे, और यह विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं और चीजों में दिखाई देगी। देखिए, मैं सोचता हूँ कि अन्य चीजें जिसके लिए मैं यह कहूँगा कि वह यह है कि परमेश्वर हमें पूरी पृथ्वी को उसकी महिमा से भर देने के लिए बुलाता है, और जब हम ऐसा करते हैं, तो हम जलवायु की विविधता, क्षेत्र की विविधता पर ध्यान देने जा रहे हैं। आप भूमध्य रेखा पर सही तरीके से एक एस्किमो की झोपड़ी को नहीं निर्मित कर सकते हैं और अलास्का में घास की झोपड़ियाँ कार्य नहीं करेंगी। परिणामस्वरूप, जब हम पूरी पृथ्वी को भरते हैं और पूरी पृथ्वी को अपने अधिकार में ले लेते हैं, तो वहाँ पर स्वाभाविक ही इस तरह की विविधतायें मिलेंगी जिन्हें हम उस समय प्रतिबिम्बित होते हुए देखते हैं जब प्रकाशिवाक्य यह कहता है कि छुटकारा पाए हुए लोगों के समूह में ऐसे लोग होंगे जो कि प्रत्येक जाति और भाषा और बोली और राष्ट्र से होगा। यह आरम्भ में निर्धारित की गई परमेश्वर की मंशा से दूर होना नहीं है। यह वास्तव में जो कुछ उत्पत्ति 1 में परमेश्वर ने आदेश दिया है उसकी पूर्ति है।

-डॉ. जिम्मी अगान्

मैं सोचता हूँ कि संसार में परमेश्वर के कार्य करने की सुन्दरता का एक अंश यह है कि वह किसी एक ही संस्कृति में कार्य नहीं कर रहा है अपितु कई संस्कृतियों में और उनके द्वारा कार्य कर रहा है। और मैं सोचता हूँ इसके बारे में बाइबल में हमें बहुत बार दृढ़ता से कहा गया है। सुसमाचार की उदघोषणा सभी राष्ट्रों के लिए है, अर्थात्, सभी जातियों के लोगों, इस संसार के सभी लोगों के समूहों के लिए है। और जब आप

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अन्त में पहुँचते हैं, पवित्रशास्त्र बात करता है कि इस पृथ्वी के राजा परमेश्वर के राज्य में उनकी महिमा को ला रहे हैं: विभिन्न संस्कृतियों के ये खजाने और विशेष सामर्थ्य और वरदान जिन्हें हम इस संसार की विभिन्न संस्कृतियों में कार्य करते हुए देखते हैं, ये सारी चीजें जिन्हें परमेश्वर छुटकारे के रूप में उपयोग करता है, मनुष्य जाति के लिए उसके उद्देश्यों का हिस्सा हैं। और यह वह एक कारण जिसके लिए मैं सोचता हूँ कि यह हमारे लिए इतने ज्यादा महत्वपूर्ण है कि हमारा मसीह की देह में विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से सम्बन्ध हो ताकि हम परमेश्वर की सारी महिमा के धन के कार्य से इस संसार की विभिन्न संस्कृतियों के माध्यम से लाभ उठा सकें।

-डॉ. फिलिप्प रेयकेन

बाइबल आधारित संस्कृति और इसके आधुनिक उपयोग से सम्बन्ध का पता लगाने के लिए, हमें न केवल बाइबल आधारित नींव को ही अपने ध्यान में रखने की आवश्यकता है, अपितु साथ ही पुराने और नए नियम के दौरान बाइबल आधारित संस्कृति में हुए विकास को भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है।

विकास

बाइबल में घटित हुए घटनाक्रमों पर आधारित संस्कृति में हुए विकास को सारांशित करने के लिए बहुत से तरीके हैं, परन्तु केवल हमारे प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए, हम घटनाक्रमों पर आधारित सांस्कृतिक विकास को उन आँखों से देखेंगे जिन्हें हमने संस्कृति की नींव की जाँच करने के लिए उपयोग किया हैं। हम सर्वप्रथम बाइबल आधारित इतिहास के विकास को संस्कृति के महत्व के तौर पर देखेंगे। तब, हम यह देखेंगे कि कैसे ये दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्श बाइबल में विकसित हुए हैं। अन्त में, हम यह जाँच करेंगे कि कैसे सांस्कृतिक विविधता पवित्रशास्त्र में विकसित हुई है। आइए सबसे पहले संस्कृति की महत्वपूर्णता से आरम्भ करें।

महत्व

संस्कृति दोनों अर्थात् पुराने और नए नियमों में महत्वपूर्ण है, परन्तु पुराने नियम में संस्कृति का महत्व अत्यधिक स्पष्ट रूप से उस मात्रा में प्रकट होता है जिसमें आरम्भिक पवित्रशास्त्र इस्राएल के ऊपर एक जाति के रूप में ध्यान देता है।

उत्पत्ति की पुस्तक घटनाक्रमों में सांस्कृतिक विकास का वर्णन इस्राएल के एक राष्ट्र बन जाने से पहले वर्णित करती है, परन्तु पूरे का पूरा पंचग्रन्थ – जो कि बाइबल की प्रथम पाँच पुस्तकें हैं – मूसा की व्यवस्था की वाचा के युग के दौरान लिखा गया था, जब इस्राएल ने मिस्र से पलायन कर लिया था और एक जाति के रूप में सीनै के पहाड़ के पास इकट्ठा हो गया था। इसी कारण से, ये पुस्तकें अपना बहुत ज्यादा ध्यान परमेश्वर के आदेश और इस्राएल के राष्ट्रीय जीवन के लिए निर्देशों के ऊपर देती हैं।

बाकी का पुराना नियम, यहोशू से मलाकी तक, दाऊद की राजकीय वाचा के युग के दौरान लिखा गया था, जब इस्राएल वास्तव में पहले से ही एक पूर्ण विकसित राष्ट्र बन चुका था। ये पुस्तकें परमेश्वर के प्रकाशनों के उन प्रतिबिम्बों को सम्बोधित करते हैं जिन्होंने इस्राएल की संस्कृति को इसकी साम्राज्यिक महिमा के उठने के दौरान निर्देशित किया, विभाजित राज्य का उतार-चढ़ाव, बन्धुवाई, और पुराने नियम के अन्त में पुनर्स्थापना अर्थात् बहाली की संक्षेप अवधि।

यद्यपि पुराना नियम कई सांस्कृतिक विकासों का वर्णन करता है जो कि इस्राएल में घटित हुए, परन्तु सबसे बड़ा सांस्कृतिक विकास पवित्रशास्त्र में पुराने नियम से मसीह में नई वाचा के युग में परिवर्तित होने के युग के

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

समय घटित हुआ। इस्राएल की राष्ट्रीय संस्कृति के ऊपर ध्यान केन्द्रित करने की अपेक्षा, नया नियम अपने ध्यान को मसीही कलीसिया के सांस्कृतिक आदर्शों की ओर केन्द्रित करती है।

यह समझने के लिए कैसे यह नाटकीय परिवर्तन घटित हुआ, हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि पहली-शताब्दी के पलिश्तीन में रहने वाले ज्यादात्तर यहूदियों ने नई वाचा के युग के आगमन की ओर देखा। जैसा कि हमने पहले किसी एक अध्याय से सीखा, शान्त समय अर्थात् दोनों नियम के बीच का समय की अवधि के दौरान शास्त्रियों ने मसीह के आने से पहले के पूरे इतिहास को "इस युग" के रूप में संकेत दिया है। और उन्होंने यह सिखाया की जब मसीह प्रकट होगा, तो वह "आने वाले युग" को लेकर आएगा। उन्होंने विश्वास किया कि आने वाले युग में, मसीह प्रकट होगा, उसके लोगों को इस संसार के बुरे राष्ट्रों के विरूद्ध युद्ध में नेतृत्व प्रदान करेगा और शीघ्रता से उसके लोगों को अपने महिमामयी, विश्वव्यापी संसार में स्थापित करेगा और नाटकीय और निर्णायक ढंग से इस्राएल की संस्कृति में फेरबदल करेगा।

परन्तु यीशु और उसके प्रेरितों ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसका शासन तीन अवस्थाओं में खुलेगा: उसके प्रथम आगमन पर इसके राज्य का उदघाटन होगा, पूरे कलीसियाई इतिहास में उसके राज्य की निरन्तरता का चलते रहना, और उसके दूसरे आगमन पर उसके राज्य का शिरो-बिन्दु अर्थात् समापन पर पहुँचना। ये तीनों-अवस्था आधारित दृष्टिकोणों ने संस्कृति के प्रति उस पूरी समझ को इस तरीके से नेतृत्व प्रदान किया जिसकी परमेश्वर ने अपेक्षा की थी कि जिसे उसके लोग नई वाचा की अवधि के दौरान विकसित करेंगे।

नय नियम में संस्कृति की महत्वपूर्णता पर से नजरों को खो देना बहुत ही आसान है यदि आप मसीह के राज्य के अन्तिम लक्ष्य को प्रकाशितवाक्य 11:15 जैसे प्रसंगों के अनुसार वर्णित को ध्यान में नहीं रखते हैं:

> **स्वर्ग में इस विषय के बड़े बड़े शब्द होने लगे कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया, और वह इसके ऊपर सदैव राज्य करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:15)।**

इस प्रसंग में, हम देखते हैं कि मसीह एक दिन इस "संसार के राज्य" को इसकी कई विद्रोही संस्कृतियों के साथ नाश कर देगा। परन्तु वह बस केवल इन बुरी संस्कृतियों को नाश नहीं करेगा। वह इस संसार को एक विश्वव्यापी संस्कृति में परिवर्तित कर देगा जिसे "राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया है" के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जहाँ पर "वह इसके ऊपर सदैव राज्य करेगा।"

इसलिए, नए नियम के एक हाशिये का तत्व होने की अपेक्षा, इसमें संस्कृति इतनी ज्यादा महत्वपूर्ण है कि पवित्रशास्त्र के प्रत्येक हिस्से के अंश किसी न किसी तरीके से इस बात का निपटारा करते हैं कि कैसे मसीह परमेश्वर के प्रयोजनों को उसकी पूर्णता में लाएगा।

कुछ प्रंसग उन तरीकों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं जिन्हें यीशु ने उसके जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा सांस्कृतिक आदेश की अन्तिम अवस्था में प्रस्तावित किया है। नए नियम के अन्य हिस्से कलीसिया के नेतृत्व के ऊपर ध्यान तब केन्द्रित करते हैं जब ये मसीह के राज्य की निरन्तरता के दौरान सुसमाचार के द्वारा संसार को परिवर्तित करने में सहायता करते हैं। और फिर भी अन्य प्रंसग उस शिरो-बिन्दु की ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं जब मसीह मनुष्य जाति के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए पुन: वापस आएगा और एक ऐसी संस्कृति को स्थापित करेगा जिसमें परमेश्वर की इच्छा इस पृथ्वी पर ऐसी पूरी होगी जैसी स्वर्ग में पूरी होती है।

अब क्योंकि हमने बाइबल आधारित संस्कृति में होने वाले घटनाक्रमों में विकास का पता बाइबल आधारित इतिहास में हुए घटनाक्रमों के विकास के ऊपर आधारित संस्कृति की महत्वपूर्णता को देखने से लगा लिया है, हम अब पूरी बाइबल में पाए जाने वाले दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्शों के विकास की ओर मुड़ेंगे।

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विरोधाभासी आदर्श

उत्पत्ति 3 में दिए हुए दो सांस्कृतिक आदर्शों की स्थापना ने पुराने नियम के लेखकों का नेतृत्व सर्प की संतानों का सम्बद्ध अन्यजाति राष्ट्रों और हव्वा की संतानों का इस्राएल के साथ किया है।

अन्यजाति राष्ट्रों ने उनकी संस्कृति का विकास झूठे देवताओं और इस्राएल के परमेश्वर के विरोध में की जाने वाली सेवा में विकसित किया। उन्होंने मन्दिरों और ऊँचे स्थानों की स्थापना इन झूठे देवताओं के लिए की और कई बार तो यहाँ तक कि उन्होंने अपने स्वयं के बच्चों को इन्हें बलिदान चढ़ा दिया। परमेश्वर ने स्पष्ट कर दिया था कि उसके लोगों को इस तरह की प्रथाओं के साथ कुछ लेना देना नहीं था।

इस्राएल ने, दूसरी तरफ, परमेश्वर की मूसा के द्वारा दी गई धार्मिकता से भरी हुई व्यवस्था को अपना लिया था, और उन तरीकों से जीवन यापन करने की कोशिश की थी जो कि केवल एक सच्चे परमेश्वर की महिमा करती हो। उन्होंने सब्त का पालन किया, मूर्तिपूजा से बचाव किया, और मानवीय ज्ञान और सामर्थ्य की अपेक्षा परमेश्वर के नेतृत्व और सुरक्षा के ऊपर निर्भर रहे।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, इसका यह अर्थ नहीं था कि अन्यजाति परमेश्वर के प्रति अपनी निष्ठा का वचन दिए जाने के द्वारा इस्राएल जाति में स्वीकृत नहीं की जा सकती थी, या यह कि वे इस्राएली इतने ज्यादा भ्रष्ट नहीं हो सकते थे कि वे परमेश्वर के शत्रु बन जाएं। परन्तु जिस सीमा में प्रत्येक ने अपनी अपनी प्रथाओं के आदर्शों का पालन किया, उसी सीमा में इस्राएल ने उसकी संस्कृति को परमेश्वर की सेवा में विकसित किया, और अन्यजाति राष्ट्रों ने उनकी संस्कृतियों को झूठे देवताओं की सेवा करने में विकसित किया।

अब, उसी समय, पुराना नियम और पुरातत्वशास्त्र यह इंगित करता है कि इस्राएली ओर अन्यजाति संस्कृतियाँ कई तरीकों से आपस में एक जैसी थी। उनमें से कुछ समानताएँ इस्राएलियों के द्वारा उनके पड़ोसियों के पापपूर्ण पथों का अनुसरण करने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुईं। परन्तु अन्य समानताएँ परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह अन्यजातियों के पापपूर्ण झुकाव को रोकने के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई, ताकि उनकी संस्कृतियों के आयाम कम से कम सतही तौर पर परमेश्वर की इच्छा के प्रति सच्चे थे। ये सांस्कृतिक विभाजन सम्पूर्ण पुराने नियम में निरन्तर चलते रहते हैं।

जब हम नए नियम की ओर मुड़ते हैं, तो दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्श एक बार फिर से, परन्तु विभिन्न संगठनों के साथ प्रकट हो जाते हैं।

इस्राएल की लम्बे समय तक चलने वाली अविश्वासयोग्यता, जो कि पुराने नियम में ही आरम्भ होती है, के परिणामस्वरूप बचे हुए थोड़े से अल्पसँख्यक विश्वासयोग्य यहूदी मसीह के देहधारण के समय तक ही रह जाते हैं। और नए नियम में, अन्यजाति अब बचे हुए लोगों के साथ परमेश्वर के रूप में पूरी तरह पूर्ण लेपालक बन सकते हैं। इस तरह से, यहूदी और अन्यजाति जातियों के बीच विभाजन की अपेक्षा, नए नियम के लेखकों ने मसीह के अनुयायियों को स्त्री के बीज के साथ जोड़ा है और अविश्वासियों को सर्प के बीज के साथ जोड़ा है, चाहे वे यहूदी या अन्यजाति ही क्यों न हों।

इसी लिए यीशु ने शैतान के बारे में फरीसियों को उनके पिता के रूप में यूहन्ना 8:44 में कहा। यह, यह भी वर्णन करता है कि, रोमियों 16:20 में, पौलुस ने उत्पत्ति 3:15 का ओर संकेत किया है जहाँ उसने रोम के मसीहियों को आश्वासन दिया है कि परमेश्वर शैतान को उनके पैरों के नीचे कुचल देगा।

इस्राएल और अन्यजाति राष्ट्रों के मध्य सम्बन्ध एक दिलचस्प प्रश्न है...और यदि आप उत्पत्ति 18 और अन्य स्थानों पर देखें, तो आप पाएंगे कि परमेश्वर अब्राहम के साथ एक प्रतिज्ञा बान्धता है कि वह अब्राहम और उसके वंशज् को आशीषित करेगा। और यदि हम पवित्रशास्त्र को बहु-गुणी-भाग वाले एक नाटक के रूप में सोचें, तो आप पाएंगे कि प्रथम भाग के प्रदर्शन में, जहाँ परमेश्वर अब्राहम के साथ प्रतिज्ञा बान्धता है, और वह इस्राएल के राष्ट्र की संभाल, उसे उसके चारों ओर के भ्रष्ट राष्ट्रों से सुरक्षा प्रदान करते

हुए करता है; वे असफल हो जाते हैं, परन्तु वह उनको अनुशासित करता है। वह इस राष्ट्र की सुरक्षा उस समय तक करता है जब तक कि मसीह नहीं आ जाता है। मसीह आता है और इस्राएल के लिए उद्धार की घोषणा करता है। यदि आप मत्ती के सुसमाचार की ओर देखें, यीशु मत्ती 15 में कहता है, "मैं इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के लिए आया हूँ।" कनानी स्त्री उससे उसकी बेटी के लिए याचना करती है। और यह कई बार परेशान करने वाली बात है। लोग कहते हैं कि, "ठीक है, उसने उसकी पुत्री को तुरन्त ठीक क्यों नहीं कर दिया?" और यीशु यह बात कहने के रास्ते पर है कि, "यह नाटक के दूसरे भाग का प्रदर्शन है।" ठीक है? "मैं इस्राएल की खोई हुई भेड़ों के उद्धार की घोषणा करने आया हूँ।" परन्तु फिर आप सुसमाचार के अन्त में जा पहुँचते हैं, जो कि मत्ती 28 है, और हमें यहाँ पर नाटक के तीसरे भाग को आरम्भ करना है, वह भाग जिसमें हम रह रहे हैं, जहाँ पर सुसमाचार सभी राष्ट्रों में जाता है, यहूदियों और अन्यजातियों दोनों के पास एक जैसा। रोमियों 1 में यह दिलचस्प है कि, यहाँ तक कि भाग तीन में भी, पौलुस इस भिन्नता को बनाए हुए है। वह कहता है कि "पहले यहूदी, तब फिर अन्यजातियों के लिए।" वह उसकी जाति के लोगों के लिए दायित्व को अनुभव करता है, उनके लिए जो कि अब्राहम की प्रतिज्ञा प्राप्त लोग हैं। मेरा दायित्व सबसे पहले उन्हें सुसमाचार सुनाने का है। इसलिए वह आराधनालय में जाता है और उन प्रतिज्ञाओं की घोषणा करता है जो कि उनके पूर्वजों को दी गई थी कि वे सच्ची हैं। परन्तु जब उसे आराधनालय से बाहर निकाल कर फेंक दिया जाता है या वे अब और ज्यादा उसकी सुनना नहीं चाहते हैं, तो वह तुरन्त अन्यजातियों के पास चला जाता है। क्योंकि, जैसा कि वह इफिसियों 2 में विवरण देता है, कि मसीह की क्रूस की मृत्यु के द्वारा, विभाजन करने वाली यहूदियों और अन्यजातियों के बीच की दीवार टूट गई है... तो यहाँ पर एक सुन्दर एकता मिलती है जो कि अब हमारे पास यहूदियों और अन्यजातियों के परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रूप में इकट्ठा होने में दिखाई देती है।

- डॉ. रॉबर्ट एल. प्लूमेर

नया नियम अक्सर विश्वासियों को चेतावनी देता है कि वे इस संसार के सदृश न बनें क्योंकि कलीसिया और संसार दो विरोधाभासी आदर्शों का अनुसरण कर रहे हैं। परन्तु उसी समय, नए नियम के लेखक स्वीकार करते हैं कि कलीसिया और संसार के मध्य में खींची गई लकीर स्वयं में पूर्ण नहीं है। जब संस्कृति का विकास बाइबल में हुआ, तो उस समय आरम्भिक मसीहियों ने अक्सर उन प्रथाओं और दार्शनिक दृष्टिकोणों का समर्थन किया जिन्हें अविश्वासी अनुसरण कर रहे थे। और जैसा कि हमने पहले सीखा है, उनमें से कुछ समानतायें मसीह के अनुयायियों के ऊपर पाप के प्रभाव के परिणामस्वरूप आईं, और अन्य समनाताएँ संसार के ऊपर सामान्य अनुग्रह के सकारात्मक प्रभाव से उतपन्न हुईं।

बाइबल आधारित सांस्कृतिक विकासों के ऊपर हमारे ध्यान में, हमने पुराने और नए नियम में दी हुई संस्कृति की महत्वपूर्णता के ऊपर देखा, और यह कि कैसे विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्श बाइबल आधारित पूरे इतिहास के दौरान विकसित हुए हैं। आइए अब हम हमारे तीसरे विषय की ओर मुड़ें: जो कि पवित्रशास्त्र में सांस्कृतिक विविधता के विकसित होने के बारे में है।

विविधता

जब हम पुराने नियम की छानबीन करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें कई तरह की व्यवस्थायें और निर्देश हैं जिन्हें इस्राएल की राष्ट्रीय संस्कृति को दृढ़ करने के लिए रूपरेखित किया गया है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने यह अपेक्षा की कि सभी इस्राएली संस्कृतियाँ एक जैसी ही बन जाएँ। सच्चाई तो यह है कि, इस्राएल के बीच में रहती हुई विभिन्न संस्कृतियों को विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के विशेष और सामान्य प्रकाशनों को लागू करना था, जिसके परिणामस्वरूप विविध संस्कृतियों के आदर्श उभर कर सामने आ जाते।

इनमें से बहुत सी विभिन्नताएँ एक साथ प्रकट हुईं। लेवी याजकों ने परमेश्वर की व्यवस्था को उनके समाजों में निश्चित तरीके से लागू किया, जबकि उसी समय राजाओं और अन्य राजनैतिक नेताओं ने परमेश्वर की व्यवस्था को भिन्न तरीके से लागू किया। एक परिवार ने उसके सदस्यों के लिए उपयुक्त तरीके से परमेश्वर की व्यवस्था को लागू किया, जबकि अन्य परिवारों ने परमेश्वर की व्यवस्था को इस तरीके से लागू किया जैसा उनके सदस्यों के लिए उपयुक्त था।

इससे आगे, यहाँ तक कि और भी ज्यादा विभिन्नताएँ उत्पन्न हुईं जब परमेश्वर ने अधिक से अधिक विशेष प्रकाशनों को इस्राएल को समय के दौरान दिया। परमेश्वर ने उसके लोगों के लिए जब वे जंगल के बीच में यात्रा कर रहे थे, तो एक निश्चित सांस्कृतिक आदर्शों का आदेश दिया और कनान पर विजय के दौरान भिन्न आदर्शों को दिया। परमेश्वर ने परिवर्तनों का ठहराया जब उसने इस्राएल में शासन की स्थापना की और साथ ही जब उसने सुलैमान को आज्ञा दी कि वह यरूशलेम में मन्दिर का निर्माण करे। इस्राएल की संस्कृति में अन्य भिन्नताएँ निर्वासन के दौरान और निर्वासन के बादे में आईं।

इस्राएल के सांस्कृतिक जीवन के कुछ पहलू उनके पूरे इतिहास में कुछ ज्यादा परिवर्तित नहीं हुए। वह आरम्भ से लेकर अन्त तक एक पितृसत्तात्मक संस्कृति थी। पति परिवार में मुख्य व्यक्ति था। प्रत्येक तरीके से वही केवल मुख्य व्यक्ति था। मुझे नीतिवचन का स्मरण आ रहा है, जो यह कहता है कि तू अपने पिता का बहुत ज्यादा सम्मान कर और अपनी माता को श्राप न दे। परन्तु इस पर भी, संस्कृति आरम्भ से लेकर अन्त तक व्यापक रूप में पितृसत्तात्मक थी। दूसरी ओर, उनका राष्ट्रीय जीवन इसकी अपेक्षा बहुत तेजी से नाटकीय तरीके से ढीले गोत्रों में से परिवर्तित हुआ था और फिर अधिक मजबूती से आदिवासी संरचना में संगठित हुआ था, अन्त में उसने एक राष्ट्र के रूप के पद को प्राप्त किया, और फिर राष्ट्र को नाश कर दिया गया था और तब एक विस्तृत संसार में बस केवल एक संस्कृति के रूप में, और फिर यह समझने की कोशिश करना, हम परमेश्वर के लोग होने के नाते कौन हैं? इस तरह से, उनकी राजनीतिक स्थिति बहुत अधिक नाटकीय ढंग से समय के दौरान परिवर्तित हुई।

-डॉ. जॉन औसवाल्ट

जब हम नए नियम की ओर मुड़ते हैं तो हम इस विविधता को पुन: पाते हैं। पुराने नियम के सांस्कृतिक आदर्श अभी भी जीवन के ऊपर लागू हैं, परन्तु उन्हें इस सच्चाई के आलोक में देखना है कि परमेश्वर के लोग अब एक राष्ट्र के रूप में नहीं रह गए थे। परमेश्वर के लोग अब एक कलीसिया थे, एक ऐसा समुदाय जिसे कई विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों के भीतर रहने के लिए बुलाया गया है। इसलिए, जैसा कि हो सकता आप यह अपेक्षा करते हों, कि नई वाचा के युग में परमेश्वर ने उसके विश्वासयोग्य लोगों को बहुत बड़ी सांस्कृतिक विविधता में विकसित होने के लिए बुलाया है।

लोगों और परिस्थितियों के मतभेदों ने मसीही समाजों को बाइबल आधारित शिक्षाओं को एक दूसरे से भिन्न तरीके से लागू करने के लिए नेतृत्व प्रदान किया है। उदाहरण के लिए, यहूदियों और अन्यजाति विश्वासियों ने उनकी स्वयं की परिस्थितियों पर आधारित होकर विशिष्ट सांस्कृतिक प्रथाओं को लागू किया है। और मसीही कलीसियायें जो कि भिन्न क्षेत्रों में स्थित थीं, जब उन्होंने बाइबल को लागू किया तो उनको लोगों और परिस्थितियों को ध्यान में रखना था। और विभिन्न पारिवारिक समूहों ने विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर के वचन का अनुसरण विविध तरीकों से किया।

परन्तु स्मरण रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नई वाचा का विशेष प्रकाशन तुरन्त से प्रकट नहीं हुआ। लगभग एक शताब्दी के बाद, परमेश्वर ने उसकी इच्छा को उसकी कलीसिया के लिए मसीह और मसीह के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा प्रकट किया। परिणामस्वरूप, नए नियम की कलीसिया की संस्कृति भी समय के साथ विविधता में मिलती है। उदाहरण के लिए, खतने की प्रथा नाटकीय ढंग से उस समय परिवर्तित हो गई जब प्रेरितों और प्राचीनों ने प्रेरितों के काम 15 में यरूशलेम में मुलाकात की। और जब भी नए नियम की पुस्तक

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

को लिखा और प्राप्त किया गया, विभिन्न मसीही कलीसियायें परिवर्तनों में से होकर निकलीं। इसी तरह और कई अन्य कारणों से, वहाँ नए नियम के समयों में मसीही समाजों के बीच में सांस्कृतिक विविधता की बहुत ज्यादा महत्ता थी।

अब क्योंकि हमने बाइबल आधारित संस्कृति और आधुनिक उपयोग को बाइबल आधारित संस्कृति की नींवें और जिस तरह से बाइबल आधारित घटनाक्रमों के विकास ने बाइबल की संस्कृति को प्रभावित किया है, की जाँच-पड़ताल कर ली है, इसलिए आइए हम हमारे तीसरे विषय की ओर मुड़ें। इन सभी बातों का पवित्रशास्त्र के हमारे आधुनिक उपयोग के लिए क्या कहना हैं?

उपयोग

हमारे दिनों में, इवैन्जलिकल्स अर्थात् सुसमाचारवादी विश्वास को मूल रूप से ऐसा सोचते हैं कि यह व्यक्तिगत् है, किसी एक व्यक्ति का निजी विषय। अब यह सुनिश्चित रहे कि, पवित्रशास्त्र परमेश्वर के साथ हमारे व्यक्तिगत् सम्बन्ध के बारे में बहुत कुछ बोलता है। परन्तु हममें से बहुतेरे बाइबल के इस आयाम के बारे में इतना ज्यादा जोर दे देते हैं कि हम में आधुनिक संस्कृति के लिए पवित्रशास्त्र के निहितार्थों के उपयोग में बहुत कम दिलचस्पी रह जाती है। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, पवित्रशास्त्र हमारे विश्वास के सांस्कृतिक आयामों के ऊपर इतना ज्यादा जोर देता है कि हमें पवित्रशास्त्र को आज की संस्कृति के लिए स्वयं को समर्पित करना होगा।

हम उस आधुनिक उपयोग के बारे के ऊपर ध्यान देंगे जिसके लिए बाइबल हमें संस्कृति के ऊपर उसी तरीके से जोर देती है जैसे कि हमने पवित्रशास्त्र में घटित हुए घटनाक्रमों में संस्कृति के विकास और इसकी नींव को देखा था। सर्व प्रथम, जब हम पवित्रशास्त्र का उपयोग करते हैं तो उस समय संस्कृति के महत्व की खोजबीन करेंगे। इसके बाद, हम दो विरोधाभासी संस्कृति आदर्शों को देखेंगे जिन्हें पवित्रशास्त्र के हमारे आज के उपयोग को प्रभावित करना चाहिए। और अन्त में, हम यह देखेंगे कि कैसे आधुनिक उपयोग सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखना चाहिए जिसे परमेश्वर ने हमारे समय के लिए ठहराया है। आइए संस्कृति में आधुनिक उपयोग के महत्व के साथ आरम्भ करें।

महत्व

पवित्रशास्त्र के कई प्रसंग हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि क्यों बाइबल को आधुनिक संस्कृति में लागू करना महत्वपूर्ण है। परन्तु इस बात पर ध्यान देने के लिए आसान तरीकों में से एक यह देखना है कि कैसे मसीह ने उसके अनुयायियों को इस संसार की प्रत्येक संस्कृति को जो कुछ उसने आज्ञा दी थी उसकी पूरी मात्रा में शिक्षण देना है।

सुनिए उस तरीके को जिसमें यीशु ने मत्ती 28:19-20 में इसे कहा, उस जाने पहचाने प्रसंग को जिसे मसीही विश्वासी अक्सर महान् आदेश या "सुसमाचारीय आदेश" कह कर पुकारे हैं। इस प्रसंग में, यीशु ने उसके चेलों को कहा कि:

> **इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्राआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूँ (मत्ती 28:19-20)।**

यह प्रसंग मसीह के मिशन को सारांशित करता है जब तक कि वह वापस उसकी महिमा में नहीं आ जाता है। परन्तु यह कैसे हमारी आधुनिक सांस्कृतिक प्रयासों से सम्बन्धित है, के लिए इसकी प्रशंसा करने पर, यह हमारी सहायता यह देखने में करता है कि कैसे सुसमाचारीय आदेश मानव जाति को उत्पत्ति के आरम्भ में दिए गए

सांस्कृतिक आदेश में गूँजता है। उत्पत्ति 1:28 में दिए गए सांस्कृतिक आदेश, में परमेश्वर ने मानव जाति से कहा कि "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ।"

इसी तरह से, मत्ती 28:19 में, मसीह ने उसके अनुयायियों को वृद्धि करने के लिए बुलाया जब उसने यह कहा कि, "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्राआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" बहुत कुछ आदम और हव्वा की तरह, जैसे उन्हें परमेश्वर के स्वरूप से इस संसार को भर देना था, मसीही विश्वासियों को भी परमेश्वर के छुटकारा पाए हुए स्वरूप से गुणन करना है। और हम इस कार्य को लोगों को मसीह में बचाने वाले विश्वास में नेतृत्व प्रदान करके करते हैं।

परन्तु यीशु का सुसमाचारीय आदेश परमेश्वर के लिए विश्वासयोग्य सेवकों की वृद्धि करने में ही नहीं रूक जाता है। मत्ती 29:20 के अनुसार, हमारे मिशन में "उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है" भी सम्मिलित है। बिल्कुल वैसे ही जैसे आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा को पूरा करने के द्वारा इस पृथ्वी को भरना और इसे अपने अधीन करना था, मसीही विश्वासियों को भी सारे राष्ट्रों को परमेश्वर की आदेश की शिक्षा देकर पूरा करना था, और इसमें संस्कृति के लगभग हर पहलू की शिक्षा भी सम्मिलित है।

हम इसे इस तरीके से देखते हैं: आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना था और इस पृथ्वी को अपने अधीन करके संस्कृति को निर्मित करना था, और हमें परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना है और राष्ट्रों को शिष्य बनाते हुए संस्कृति का निर्माण करना है।

मत्ती 28 से यह स्पष्ट होना चाहिए कि, यीशु ने उसके अनुयायियों से अपेक्षा की कि उनका प्रभाव प्रत्येक संस्कृति के ऊपर विश्वासियों को बपतिस्मा देने और सभी राष्ट्रों को उसके आदेशों की शिक्षा देने के द्वारा पड़ना चाहिए। उसकी शिक्षायें सार्वजनिक सांस्कृतिक मुद्दों जैसे गरीबी, वित्त सम्बन्धी, स्वास्थ्य, विवाह, न्याय, धर्म, राजनीति और यहाँ तक कि करों के भुगतान के लिए सम्बोधित की गई थीं। इसलिए ही हम नए नियम में एक विस्तृत मात्रा में सांस्कृतिक मुद्दों को स्पर्श होते हुआ पाते हैं।

इन्हीं विचारों के साथ, मत्ती 5:13-14 में, मसीह बड़े साहस के साथ उसके शिष्यों को यह वर्णन करता है:

तुम पृथ्वी के नमक हो... [और]... तुम जगत की ज्योति हो (मत्ती 5:13-14)।

जैसा कि इतिहास ने समय-समय पर दिखाया है, जब मसीह के अनुयायियों ने विश्वासयोग्यता से स्वयं को उन सारी शिक्षाओं के लिए समर्पित कर दिया जिसे मसीह ने प्रत्येक राष्ट्र को सिखाने के लिए आदेश स्वरूप दी थी, तो हमारे पास सकारात्मक रूप से पूरे संसार की प्रत्येक संस्कृति के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करने की क्षमता है। और इसी कारण से, बाइबल के हमारे आधुनिक उपयोग मानव संस्कृति को पूरी मात्रा में सम्बोधित करना चाहिए।

मत्ती 5 में, यीशु उसके शिष्यों से कहता है कि उन्हें इस पृथ्वी के नमक और इस संसार की ज्योति होना है। और आधुनिक पाठकों के लिए, यह एक रहस्य से भरे हुए कथन की तरह है... आप इसके बारे में सोचिए, प्राचीन श्रोताओं के लिए, यह भाषा क्या सम्प्रेषित करती है, विशेषकर पवित्रशास्त्र की संस्कृति में क्या निहित है? और नमक एक ऐसी वस्तु थी जिसे वस्तुओं को सड़ने से रोकने के लिए उपयोग किया जाता था, परिणामस्वरूप नमक को मांस या मछली को सड़ने से रोकने के लिए उपयोग किया जाता था, उनको संरक्षित किया जाता था, और यह ऐसी वस्तु थी जो स्वाद को जोड़ देती थी। और अब आप मसीही विश्वासियों के बारे में सोचें। उन्हें इस संसार को कई तरीकों से धार्मिकता की उपस्थिति को परमेश्वर के औजार होने के नाते प्रभावित करना था, इस संस्कृति को संरक्षित करना था या परमेश्वर की सच्चाई की उपस्थिति से संस्कृति को स्वादिष्ट बनाना था। और ज्योति भी इसी का चित्रण करती है। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में ज्योति को प्रकाशन, ऐसा जैसा कि कुछ प्रकाशित हो रहा है, का स्वरूप दिखाया गया है।

और मसीही विश्वासियों को इस संसार में ऐसा होना चाहिए कि वे ये प्रकाशित करते हों कि परमेश्वर कौन है, को सम्प्रेषित करते हुए, इस अन्धेरे संसार को परमेश्वर कौन है, को सच्चाई और धार्मिकता के साथ प्रदीप्तमान करते हुए।

-रॉबर्ट डॉ. रॉबर्ट एल. प्लूमेर

आधुनिक उपयोग और बाइबल आधारित संस्कृति के ऊपर हमारे अध्ययन में, हमने मसीह के अनुयायियों के लिए आज की संस्कृति की महत्वपूर्णता को देखा। अब आइए हम हमारे दूसरे विषय को देखें। कैसे दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्शों का अस्तित्व बाइबल के हमारे आधुनिक उपयोग को प्रभावित करना चाहिए?

विरोधाभासी आदर्श

जब मसीह इस पृथ्वी पर आया, तो उसने शैतान के ऊपर अपनी महान् विजय की अन्तिम अवस्था का उदघाटन किया। परन्तु यह विजय उस समय पूरी होगी जब मसीह पुन: सभी वस्तुओं के शिरो-बिन्दु के समय अपनी महिमा सहित वापस आएगा। इस बीच, उसके राज्य की निरन्तरता के दौरान, मानव जाति निरन्तर सर्प की सन्तान जो कि अविश्वासी संसार है जो परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह से भरे हुए सांस्कृतिक आदर्श का अनुसरण करती है और हव्वा की सन्तान, जो मसीह के अनुयायी हैं जो परमेश्वर की सेवा के सांस्कृतिक आदर्श का अनुसरण करते हैं, में विभाजित रहेगा।

परन्तु, जैसा कि बाइबल के समयों में हुआ था, परमेश्वर के लोगों और इस संसार के मध्य पड़ी हुई रेखा अपने आप में पूर्ण नहीं है। जब तक मसीह पुन: वापस नहीं आ जाता, उसके लोग पृथ्वी पर निरन्तर पाप के शेष बचे हुए प्रभाव से संघर्षरत् रहेंगे। हम पाप के अत्याचार से स्वतंत्र हैं, परन्तु इसके प्रभाव से स्वतंत्र नहीं हैं। इसी समय, परमेश्वर का सामान्य अनुग्रह संसार को नियंत्रित रखेगा जिसके परिणामस्वरूप यहाँ तक कि अविश्वासी भी अक्सर ऐसा जीवन यापन करते हैं, कुछ सीमा तक, जो कि परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप होता है। और यह विशेषकर उन राष्ट्रों के साथ सत्य है जहाँ पर सुसमाचार का बहुत ज्यादा प्रभाव पड़ा है।

मसीह के अनुयायी होने के नाते, यह हमारा दायित्व है कि हम उन सांस्कृतिक पथों का अनुसरण करें जो कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सत्य हैं और उनसे बचें जो कि नहीं हैं। कई बार जिन पथों का हम अनुसरण करते हैं उन्हें इस संसार से बिल्कुल भिन्न होना चाहिए। बाइबल के लेखकों ने बार-बार उनके मूल श्रोताओं को मूर्ति पूजा, व्यभिचार, स्वार्थ, अभिमान, अन्याय और अन्य सांस्कृतिक बुराइयों के समूह में गिरने से बचने के लिए चेतावनी दी है। जहाँ कहीं हम आज के हमारे दिनों में ऐसी बुराइयों के प्रकारों को देखते हैं, तो हमें इनसे मुड़ जाना चाहिए।

परन्तु अन्य समयों में, बाइबल के लेखकों ने उनके मूल श्रोताओं को उत्साहित किया कि वे सामाजिक सम्बन्धों, प्रौद्योगिकी, कला, संगीत, वास्तुकला, कानून, और राजनीति के विभिन्न आयामों में सामान्य अनुग्रह के पड़ने वाले प्रभावों की पहचान करें। प्रत्येक बार हम पाते हैं कि पवित्रशास्त्र उन तरीकों को अनुमोदित करता है जिनमें अविश्वासी रहे थे, तो हमें परमेश्वर के सामान्य अनुग्रह के वैसे प्रभावों को हमारे आज के संसार की संस्कृतियों के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों की खोज करनी चाहिए। जब तक हम पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के प्रति सच्चे बने रहेंगे, हमें स्वतंत्रता के साथ सामान्य अनुग्रह की आशीषों को विज्ञान, कला, राजनीति और जीवन के अन्य पहलुओं का समर्थन करना चाहिए।

हम कई बार इस बात को समझने में कठिनाई को प्राप्त करते हैं कि आज के हमारे दिनों में पवित्रशास्त्र में दिए हुए सांस्कृतिक आदर्शों को कैसे लागू करें। परन्तु साधारण शब्दों में, हमें उन तरीकों को ध्यान में रखना चाहिए जिनमें पूरी बाइबल में परमेश्वर ने संस्कृति के विभिन्न आयामों को निर्देशित किया। जब हम उन सब की तुलना करते हैं जिसे परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र में संस्कृति के विभिन्न आयामों के बारे में प्रकट किया है, तो हम कम से कम ऐसे चार तरीकों को पाते हैं जिनमें परमेश्वर ने सांस्कृतिक आदर्शों को निर्देशित किया है। उसने स्थाई रूप से कुछ

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आदर्शों को स्वीकृत किया है, जैसे कि विवाह और कार्य। अन्य आदर्शों को उसने केवल अस्थाई रूप से अनुमोदित किया है, जैसे कि मिस्र से कनान की ओर उनके पलायन के समय इस्राएलियों के गोत्रों के बीच का प्रबन्ध। अन्य समयों पर, उसका पापियों के साथ धैर्य, परमेश्वर ने अस्थाई रूप से उसके लोगों के कुछ सांस्कृतिक गतिविधियों को सहन किया, जैसे बहुविवाह और दासता, यद्यपि उसने इन्हें अस्वीकृत कर दिया था। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, पूरे पवित्रशास्त्र में, हम कई ऐसे सांस्कृतिक आदर्शों को देखते हैं जिन्होंने परमेश्वर से स्थाई अस्वीकृति को प्राप्त किया, जैसे कि अन्याय और मूर्तिपूजा।

दूसरे शब्दों में, एक सांस्कृतिक आदर्श को आज के हमारे जीवनों में लागू करने के लिए जिसे हम बाइबल में पाते हैं, हमें प्रसंग में ही परमेश्वर के मूल्याकंन की ओर देखना चाहिए। तब, फिर हमें बाइबल आधारित अन्य प्रसंगों से प्रासंगिक नैतिक मापदण्डों की खोज करनी चाहिए और बाइबल आधारित तत्वों की पृष्ठभूमि जिन्हें हम देखते हैं, के लक्ष्यों और उद्देश्यों का निर्धारण करना चाहिए। इस तरह से, हम समझ सकते हैं कि कैसे बाइबल आधारित प्रसंगों में दिए हुए सांस्कृतिक आदर्श दो विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्शों को परमेश्वर की सेवा या उसके विरूद्ध विद्रोह को प्रस्तुत करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम बाइबल में दी हुई संस्कृति के आदर्शों को उपयुक्त रूप से हमारी आज के आधुनिक संसार में लागू करने में सक्षम हो जाएंगे।

आधुनिक उपयोग को संस्कृति की महत्वपूर्णता और आज के हमारे संसार में विरोधाभासी सांस्कृतिक आदर्शों के आलोक में देखने के बाद, हम अब हमारे तीसरे विषय के ऊपर ध्यान देने की और मुड़ सकते हैं। जब हम हमारे दिनों में पवित्रशास्त्र को लागू करते हैं तो कैसे हमें सांस्कृतिक विविधताओं के साथ निपटारा करना चाहिए?

विविधता

जब हम इस संसार के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले विभिन्न विश्वासियों से मुलाकात करते हैं, तो यह स्पष्ट है कि हमारी भाषा, कपड़ों को पहनने का तरीका, हमारा खान-पान, संगीत और कई अन्य सांस्कृतिक आदर्श उनसे बहुत ज्यादा भिन्न हो। ऐसा क्यों सच हैं? यदि हम सभी पवित्रशास्त्र के मापदण्डों का अनुसरण करने की कोशिश करते, तो फिर क्यों हमारी संस्कृति के आदर्श बहुत ज्यादा भिन्न दिशाओं में चले गए हैं? ठीक है, यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है, हममें कुछ मतभेद अभी भी विद्यमान है क्योंकि हम सभी उन तरीकों में रहने में विफल हो गए हैं जो कि पवित्रशास्त्र के प्रति सच्चे हैं। परन्तु हमारी विफलताओं के अतिरिक्त, यहाँ पर पूरे संसार में परमेश्वर के लोगों के लिए सांस्कृतिक विविधता की अपेक्षा के पीछे कई वैध कारण भी हैं।

जैसा कि हमने, नई वाचा के युग के उदघाटन के साथ देखा, कि परमेश्वर के लोग अब आगे से एक इकलौते राष्ट्र नहीं रह गए। और पिछले दो हजार वर्षों के दौरान, जब सुसमाचार आगे से आगे की ओर विस्तारित इस संसार में होता चला गया है, परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों ने तेजी से प्रगति करती हुई विविध संस्कृतियों में जीवन यापन की चुनौतियों का सामना किया है। इन चुनौतियों ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न को खड़ा कर दिया है। कितनी अधिक सांस्कृतिक विविधता की अनुमति देनी चाहिए? हमें इसकी कितनी सीमा को निर्धारित करना चाहिए?

पवित्रशास्त्र में ऐसे कई स्थान हैं जहाँ पर इस प्रश्न को सम्बोधित किया गया है, परन्तु इस मुद्दे पर खोजबीन करने के लिए सर्वोत्तम स्थानों में से एक 1 कुरिन्थियों 9: 19-23 में मिलता है। इस प्रसंग में, पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया को कहा कि:

> **क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है; कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ। मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ, जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं उन के लिये मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना, कि उन्हें जो व्यवस्था के**

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आधीन हैं, खींच लाऊँ। व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूँ) व्यवस्थाहीन सा बना, कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊँ। मैं निर्बलों के लिये निर्बल सा बना, कि निर्बलों को खींच लाऊँ, मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूँ, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ। और मैं सब कुछ सुसमाचार के लिये करता हूं, कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ (1 कुरिन्थियों 9: 19-23)।

इस प्रसंग में, पौलुस यह वर्णन करता है कि कैसे उसकी प्रतिबद्धता ने सुसमाचारीय आदेश को पूरा करने के लिए उसका नेतृत्व एक विस्तृत श्रृंखला वाली सांस्कृतिक अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को अपना लिया है। जैसा कि वह आयत 22 में सारांशित करता है कि, "मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना हूँ, कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।"

एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो इधर और उधर यात्रा करता रहा, पौलुस ने असाधारण मात्रा में सांस्कृतिक लचीलेपन का अभ्यास किया। आयत 20 में वह कहता है कि, "मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना" जब वह यहूदी समुदायों में था। और आयत 21 में, वह ऐसे कहता है कि, "मैं व्यवस्थाहीनों के लिये मैं व्यवस्थाहीन सा बना" जब वह अन्यजातियों के समुदायों में था।

परन्तु ध्यान दीजिए कि कैसे पौलुस सांस्कृतिक विविधता की सीमाओं को निर्धारित करता है जब वह इन्हें अपनाने के लिए तैयार था। आयत 20 में वह ऐसे कहता है कि, "मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना(यद्यपि में व्यवस्था के अधीन नहीं हूँ)।" दूसरे शब्दों में, पौलुस ने यहूदी समुदायों के सांस्कृतिक आदर्शों का अनुसरण किया, परन्तु वह व्यवस्था के अधीन नहीं था जैसा कि उसके दिनों के धार्मिक अगुवों ने समझा था। पौलुस के समय के बहुतेरे फरीसियों और धार्मिक अगुवों ने व्यवस्था का उपयोग स्वयं की आत्म-केन्द्रित-धार्मिकता को दिखावे के लिए प्रयोग किया। परन्तु जैसा यीशु ने मत्ती 23 में इंगित किया था, उनका यह व्यवहार उन्हें दोष और मृत्यु की ओर ले गया। यहाँ पर, पौलुस ने विवरण दिया है कि उसने संस्कृति को संस्कृति के मापदण्डों को अपनाए बिना ही अपना लिया था जो अन्ततः उसे केवल परमेश्वर के न्याय के अधीन ले आएंगे।

इसी तरह से, आयत 21 में उसने कहा कि, "व्यवस्थाहीनों के लिये मैं (जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं, परन्तु मसीह की व्यवस्था के आधीन हूँ) व्यवस्थाहीन सा बना।" पौलुस ने अन्यजातियों के समुदायों की सांस्कृतिक अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं को साझा किया, परन्तु केवल उस सीमा में जिसमें उसने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन नहीं किया था जैसे कि मसीह ने उसकी नई वाचा के लोगों को इनकी व्याख्या की थी।

बहुत कुछ इसी तरह से, आज सुसमाचारीय आदेश की पूर्ति करने के लिए, मसीह के विश्वासयोग्य अनुयायियों को चाहिए कि वे पवित्रशास्त्र को प्रत्येक उस समय लागू करने के लिए तैयार रहें जब कभी भी उनका सामना अन्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोगों और परिस्थितियों से होता है। स्थानीय सभायें, मसीही व्यवसायी, विद्यालय, चिकित्सालय और यहाँ तक कि मित्रता एक दूसरे से भिन्न होगी। और इसमें कोई सन्देह नहीं है कि, जैसे जैसे समय बीतता जाता है, ये समुदाय ऐसे लोगों और परिस्थितियों में परिवर्तित होते चले जाएंगे जो कि परिवर्तन में सम्मिलित हैं।

परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम हमारे सुमदाय की संस्कृति को आकार देने के लिए जैसा हम चाहें वैसा करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसके विपरीत, प्रेरित पौलुस की तरह, मसीह के आज के अनुयायियों को चाहिए कि वे दृढ़ता से पवित्रशास्त्र के मापदण्ड के भीतर रहने के लिए प्रतिबद्ध हो। यह प्रतिबद्धता पवित्रशास्त्र के प्रति सच्चे बने रहने की है जब हम इसे विभिन्न तरीकों से हमारे समुदायों में लागू करते हैं जो कि आधुनिक उपयोग के आयामों की एक सबसे ज्यादा अधिक जटिलता है।

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जब परमेश्वर स्वयं को हम पर प्रकट करता है, तो वह इसे समय और स्थान में होकर करता है। ये उसके प्रकाशन की महिमा और उसके छुटकारे की योजना की महिमा का अंश हैं। जब हम पुराने नियम के युग से नए नियम के युग की ओर कार्य करते हैं, तो स्पष्ट है कि हम विभिन्न सांस्कृतिक विविधताओं, विभिन्न समयावधि में रहने वाले लोगों से वार्तालाप करते हैं। वहाँ पर सभी तरह की सांस्कृतिक विविधता पाई जाती है जिसे हम देखते हैं कि वह इतिहास में निश्चित स्थानों, संस्कृतियों और पृष्ठभूमियों के संदर्भ में साथ बन्धी हुई है। हम कैसे जानते हैं कि कौन सी विविधता हम पर लागू होती है, कैसे इसमें जीवन यापन किया जाना जाए? ठीक ऐसे ही, मैं सर्वप्रथम सोचता हूँ कि हमें निश्चित नैतिक मांगों के मापदण्डों के संदर्भों में विविधता को मूल्यांकित कर लेना चाहिए। निश्चित सांस्कृतिक विविधता को अस्वीकृत किया जाना चाहिए क्योंकि उस बात के साथ असंगत है जिसमें परमेश्वर ने हमें सृजा है – अर्थात् उसके नैतिक मापदण्ड कौन से हैं, और वे प्रथायें – यद्यपि हो सकता है कि वह इन्हें प्रतिबिम्बित करती हो...सांस्कृतिक विविधता हो सकता है कि मूर्तिपूजा को प्रतिबिम्बित करती हो, हो सकता है कि परमेश्वर और उसके मापदण्डों को अस्वीकृत किए जाने को प्रतिबिम्बित करती हो।

- डॉ. स्टीफन जे. वेल्लम

सम्पूर्ण बाइबल के इतिहास के मध्य में, परमेश्वर के प्रति निष्ठावान् रहने वाले प्रत्येक समुदाय के लोगों ने निश्चित सांस्कृतिक आदर्शों को बनाए रखा। परन्तु अन्य सांस्कृतिक आदर्श समय के दौरान परिवर्तित हो गए। कोई एक विशेष सांस्कृतिक आदर्श जो कि बाइबल में पाया जाता है को कितनी निकटता से नकल किया जाना चाहिए को निर्धारित करने के लिए एक तरीका यह है कि इस बात पर ध्यान दिया जाए कि एक विशेष सांस्कृतिक गुण सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में एक जैसे रहे हैं या नहीं या वे विभिन्न कालों, लोगों और परिस्थितियों को समायोजित करने के लिए परिवर्तित हो गए हैं।

यदि सांस्कृतिक आदर्श पवित्रशास्त्र में परिवर्तित हुए हैं, तो हमें अपेक्षा करनी चाहिए कि वे हमारे समय में भी परिवर्तनशील होने वाले हैं। परन्तु यदि संस्कृति के आयाम सम्पूर्ण बाइबल के इतिहास में एक जैसे ही बने हुए हैं, तो हमें आज हमारे लिए मापदण्ड के रूप में लेने के लिए विचार करना चाहिए।

उदाहरण के लिए, पारिवारिक ढाँचा और जीवन यापन की स्थितियाँ पिछले 2000 वर्षों में परिवर्तित हो गई हैं, परन्तु पवित्रशास्त्र निरन्तर निर्देश देता है कि बच्चों को उनके माता पिता का सम्मान करना चाहिए। यह अभी भी आज के दिनों के लिए सत्य है। और यद्यपि कानून व्यवस्था एक से दूसरी संस्कृति में, एक से दूसरे युग में भिन्न होती है, पवित्रशास्त्र कभी भी इस तथ्य का फेरबदल नहीं करता है कि परमेश्वर के लोगों से ईमानदार गवाह बने रहने की अपेक्षा की जाती है जब उन्हें गवाही देने के लिए बुलाया जाए। राजनीतिक व्यवस्था, कपड़े पहनने के तरीके, संगीत, खान-पान की वरीयतायें, और पूरे बाइबिल आधारित इतिहास की संस्कृति के कई अन्य पहलू परिवर्तित हुए हैं, परन्तु हमारे परिवारों, कार्य स्थलों, और समुदायों में सम्मान और परमेश्वर की सेवा करने के निर्देश निरन्तर वैसे ही बने हुए हैं।

मसीह के अनुयायी होने के नाते, हमें इन निरन्तरताओं और अंतरालों में सावधानी के साथ प्रत्येक बार जब हम हमारे आज के दिनों में पवित्रशास्त्र के सांस्कृतिक आदर्श को लागू करते समय भिन्नता करनी चाहिए।

सारांश

इस अध्याय में, हमने बाइबल आधारित संस्कृति और आधुनिक उपयोग के ऊपर कई महत्वपूर्ण आयामों की खोजबीन की है। हमने देखा है कि बाइबल आधारित संस्कृति की नींव बाइबल के आरम्भिक अध्यायों में ही मिलती है। हमने बाइबल में घटित हुए घटनाक्रमों की संस्कृति के विकास को देखा जो कि दोनों अर्थात् पुराने और

नए नियम में मिलते हैं। और हमने यह खोज की कि कैसे बाइबल की संस्कृति के आयामों को पवित्रशास्त्र के आधुनिक उपयोगों को प्रभावित करना चाहिए।

बाइबल स्वयं स्पष्ट करती है कि मसीह के निष्ठावान् अनुयायियों को पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं को केवल व्यक्तिगत् रूप में ही नहीं, अपितु उनके जीवनों के सांस्कृतिक आयामों के ऊपर भी लागू करना चाहिए। यहाँ तक कि नई वाचा के युग के दौरान भी, हम परमेश्वर के स्वरूप में ही हैं और हमें मानवीय संस्कृति का निर्माण उन तरीकों में करने के लिए बुलाया गया जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होता है। ये आदेश निरन्तर उस समय तक प्रभावी रहेगा जब तक मसीह का पुन: आगमन नहीं होता। इसलिए हमें यह सीखना चाहिए कि हम कैसे पवित्रशास्त्र को आधुनिक संस्कृति के प्रत्येक आयाम में लागू करें।

चलचित्र ,अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम